RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

ट्रेड वार : एक वैश्विक समस्या

Mohit

M.A (Political Science), NET Qualified

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
ट्रेड वार, संरक्षवाद, सब्सिडी, टैरिफ, विश्वव्यापी मंदी, W.T.O, GATT.

ABSTRACT

संपूर्ण विश्व एक समाज के रूप में ढल गया है। प्रत्येक राष्ट्र अन्य राष्ट्र की हर प्रकार से सहायता करता है उदाहरण के लिए राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक आदि। यही संबंध किसी भी राष्ट्र की उन्नति को बढ़ावा देते है लेकिन जब कोई राष्ट्र अपने स्वार्थपूर्ण हितों के कारण नीतियों में बदलाव अर्थात् नियमों का पालन न करे तो असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। इससे सहयोग की स्थिति खत्म हो जाती है और तनाव उत्पन्न हो जाता है। ऐसी तनाव की स्थिति में राष्ट्रों के मध्य आर्थिक, व्यापारिक सहयोग की भावना निर्बल हो जाती है। जिससे एक मानसिक द्वंद उत्पन्न होता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने हक में नियमों का पालन करता है, व्यापार में उत्पन्न ऐसी स्थिति को ही 'ट्रेड वार' कहा जाता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अमेरिका चीन तथा यूरोपियन यूनियन बड़ी अर्थव्यवस्था है। 'ट्रेड वार' का मुख्य कारण राष्ट्रों की स्वार्थपूर्ण तथा संरक्षणवादी नीतियां ही है। जिसके चलते अन्य देशों के उत्पादों पर शुल्क बढ़ा या उत्पादों को प्रतिबंधित कर दिया जाता है।

शोध प्रविधि :–

इस शोध पत्र के लिए सामग्री अधिकांश रूप से द्वितीयक स्त्रोतों से ग्रहण की गई है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण, वर्तमान परिदर्श तथा वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

प्रमुख बिंदु :–

- ट्रेड वार क्या है?
- ट्रेड वार का कारण तथा आरंभ।
- विश्व व्यापार संगठन की भूमिका।
- ट्रेड वार का विश्व पर प्रभाव।
- ट्रेड वार समाप्ति के उपाय।

परिचय :–

विश्व व्यवस्था सहयोग पर आधारित होने के कारण प्रत्येक राष्ट्र आपस में जुड़े हुए है। जब राष्ट्र आपस में किए जाने वाले व्यापार के नियमों का उचित प्रकार से पालन नहीं करते। या अपने उद्योगों के संरक्षण के कारण दूसरे देश के उत्पादों को प्रतिबंधित या शुल्क की मात्रा को बढ़ा देते हैं तो अन्य राष्ट्र भी ऐसी ही प्रतिक्रिया करता है। जिस कारण सहयोग की अवस्था खत्म हो जाती है। क्योंकि प्रत्येक देश अधिकतम निर्यात तथा न्यूनतम आयात करना चाहता है। इन मतभेदों के कारण ही ट्रेड वार की स्थिति उत्पन्न होती है।

सन् 1930 में आई विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के लिए भी ऐसे ही कुछ कारण जिम्मेदार थे। विशेषकर जब अमेरिका ने 'अमेरिकी टैरिफ एक्ट 1930' पारित कर दिया। इस एक्ट के अनुसार अमेरिकी सरकार ने विदेशी आयात पर टैरिफ बढाना शुरू कर दिया। तथा अपने उद्योगों के संरक्षण की नीति अपनाई। अमेरिका की इस संरक्षणवादी नीति के कारण पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई।

अमेरिका की इस नीति की प्रतिक्रिया के रूप में अन्य राष्ट्र भी ऐसी नीति बनाने लग गए। जिसके कारण विश्व बाजार में भयानक मंदी का संकट आ गया। आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई। मंहगाई बढने के कारण अधिकतर देशों की अर्थव्यवस्था चरमर्रा गई। आखिरकार राष्ट्र सरकारों ने अनुभव किया की यह टैरिफ वार विश्व व्यापार संगठन की नीतियों की अवहेलना है। और ट्रेड वार प्रत्येक राष्ट्र के लिए हानिकारक है।

इस समस्या के समाधान के लिए वैश्विक स्तर पर वार्ताओं का दौर चला। 1932 में अमेरिका के चुनाव के बाद। फ्रेंकलिन डेलानो रूजवेल्ट ने एक एक्ट पास कर टैरिफ को सामान्य करने के लिए द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय वार्ता का प्रयास किया। इसी के कारण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद गैट नामक समझौता हुआ।

जिसे General Agreement On Trade And Tariff के नाम से जाना जाता है।

ट्रेड वार का वर्तमान परिदर्श :–

सन् 1995 में GATT की जगह W.T.O अर्थात् World Trade Organization ने ले ली। ट्रेड वार के लिए

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मुख्य रूप से तीन बडी अर्थव्यवस्थाएं जिम्मेवार है– अमेरिका, चीन तथा यूरोपियन यूनियन। हालांकि यूरोपियन यूनियन की इसमें को अहम् भूमिका नहीं है। लेकिन अमेरिका और चीन के मध्य तनाव की स्थिति चल रही है।

दोनों राष्ट्रों के मध्य टकराव की शुरूआत मार्च 2018 में शुरू हुई थी। क्योंकि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आयातित इस्पात तथा एल्युमिनियम पर आयात शुल्क लगाने की घोषणा कर दी। उन्होनें चीन के साथ 'व्यापार घाटा' का मुद्दा भी उठाया।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने चीन से महिने भर में व्यापार घाटा 100 अरब डॉलर तथा 2020 तक 200 अरब डॉलर तक घटाने को कहा तथा ऐसा न होने की स्थिति में आयातित वस्तुओं के खिलाफ दंडनीय कदम उठाने की धमकी दी।

इसकी प्रतिक्रिया के रूप में चीन ने अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर टैरिफ बढ़ा दिया। अमेरिका की घोषणा के बाद चीन ने अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह में 120 अमेरिकी उत्पादों पर शुल्क बढ़ा दिया। जिसके कारण ट्रेड वार का आरंभ हुआ।

अमेरिका द्वारा एल्युमिनियम तथा स्टील उत्पादों पर आयात शुल्क बढाने की नीति को विश्व व्यापार संगठन के अधिकतर देशों ने गलत बताया। अमेरिका का यह रवैया बहुपक्षीय हितों के खिलाफ है। भारत ने भी खाद्य सुरक्षा और कृषि उत्पादों पर सब्सिडी के मामले में विकसित देशों की और से पड़ रहे अनुचित दबाव की निंदा की।

अमेरिका–चीन ट्रेड वार :–

अमेरिका चीन से बडी मात्रा में एल्युमिनियम तथा स्टील का आयात करता है जिस कारण अमेरकिी राष्ट्रपति ने दोनों उत्पादों पर प्रवेश शुल्क बढाने के बात की। जिसके चलते चीन से भी तीखी प्रतिक्रिया आनी आरंभ हो गई जिससे अमेरिका तथा चीन के मध्य ट्रेडवार का आरंभ हो गया।

चीन अमेरिका का सबसे बडा व्यवसायिक साझेदार है। पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका ने चीन से लगभग 500 अरब डॉलर से अधिक का आयात किया था, किंतु चीन ने कुल 130 अरब डॉलर का आयात अमेरिका का व्यापार घाटा बढता जा रहा था।

वास्तव में पिछले एक वर्ष से अमेरिकी सरकार चीनी आयात पर प्रतिबंध लगाने के उपाय सोच रहा था। चीन के अनुचित व्यापार के तरीको तथा बौद्धिक संपदा को चोरी की जांच के लिए एक समिति का गठन किया तथा उसकी रिपोर्ट के आधार पर फरवरी 2018 में अमेरिकी वाणिज्य मंत्रालय ने चीन से आयातित एल्युमिनियम तथा स्टील पर टैरिफ बढाने की सिफारिश की।

चीन ने भी अमेरिकी वस्तुओं पर 50 प्रतिशत प्रशुल्क बढाने की घोषणा कर दी इस तीखी प्रतिक्रिया के कारण तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई और व्यापार की स्थिति सामान्य नहीं रही।

महत्वपूर्ण घटनाएं :–

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा स्टील तथा एल्युमिनियम पर टैरिफ बढाने की घोषणा के जवाब में चीन ने अप्रैल 2018 में 120 अमेरिकी उत्पादों पर शुल्क बढाने का निर्णय लिया। इसके बाद अमेरिका ने 50 अरब डॉलर के चीनी उत्पादों पर 25 प्रतिशत टैरिफ बढाने की घोषणा की। जिससे अमेरिका को आयात होने वाली 1300 उत्पादों की सूची टैरिफ के अंदर आ गई। इसके जवाब मे चीन ने 106 अमेरिकी उत्पादों पर 25 फीसदी टैरिफ बढाने का निर्णय लिया। इस प्रकार 'ट्रेड वार' को बल मिलता गया।

हांलाकि चीन तथा अमेरिका की आपसी प्रतिक्रिया तीखी थी लेकिन दोनों राष्ट्रों ने जो टैरिफ बढाएं उनके कार्यान्वयन की तिथी तय नहीं की जिसका अर्थ था कि आपसी सुलह की गुंजाइश बाकी है। हांलाकि विश्व बाजार में अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई थी कि क्या ट्रेड वार चलेगा या यह केवल एक बंदर घुडकी रह जाएगा।

समाधान का प्रयास :–

विश्व संकट उत्पन्न होने के डर के कारण ट्रेड वार को जल्द खत्म करना आवश्यक था। 20 मई 2018 को दोनों राष्ट्रों के मध्य समझौता हुआ और ट्रेड वार को न बढाने की उम्मीद जताई। समझौते में चीन ने अमेरिका से आयात बढाने तथा व्यापार संतुलन बनाने का भरोसा दिया। दुनिया की दोनों आर्थिक महाशक्तियों ने एक–दूसरे की आयातित वस्तुओं पर शुल्क लगाने का कदम भी वापस लेने का एलान किया।

निष्कर्ष :–

वर्तमान युग में सहयोग के द्वारा ही प्रत्येक मसले का हल निकाला जा सकता है। किसी भी प्रकार का तनाव वैश्विक स्तर पर अव्यवस्था को जन्म देता है। ट्रेड वार जैसी स्थिति प्रत्येक राष्ट्र के लिए हानिकारक है। इसके कारण राष्ट्रों के मध्य संबंध असंतुलित हो जाते है। विश्व व्यापार पर प्रभाव पडता है जिसके कारण विश्वव्यापी आर्थिक मंदी की संभावना जन्म लेती है। प्रत्येक राष्ट्र को समझौते के द्वारा ही ऐसी स्थिति से बचना होगा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूची :–

- डॉ॰ दीनानाथ वर्मा, अंतराष्ट्रीय संबंध, 1914 से आजतक का राजनयिक इतिहास, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रतियोगिता दपर्ण, जुलाई 2018
- डॉ॰ प्रभुदत्त शर्मा अंतराष्ट्रीय राजनीति
- यू॰आर॰घई॰ एवं के॰के॰घई॰ अंतराष्ट्रीय राजनीति सिद्धांत और व्यवहार।

RRIJM 2015, All Rights Reserved